उपन्यास 'अल्मा कबूतरी': कबूतरा समाज का ताना – बाना

डॉ. सरोज पाटील
श्री शहाजी छ. महाविद्यालय, कोल्हापुर
मो.9921770661
Email-saroj120575@gmail.com

सारांश –

मैत्रेयी पुष्पा जी ने 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास द्वारा कबूतरा जनजाति की जीवनगाथा को पाठकों के सामने रखा है | भारतीय समाज की मुख्यधारा से किनारे फ़ेंक दिए गए ये लोग अपनी खास जीवनशैली के साथ जीते आए हैं | अंग्रेजों के गजेटीयरों में अपराधी जनजातियां संबोधित किए गए ये लोग देश के गली मोहल्लों में, शहरों के किनारों पर अल्पकालिक बस्तियां बनाकर सदियां गुजार देते हैं |

प्रस्तुत उपन्यास द्वारा लेखिका ने कबूतरा जनजाति का पूरा ताना-बाना यहाँ पर बुना हैं | जिसमें कबूतरा जनजाति की व्यवस्था, उनकी अपनी संस्कृति, रितरिवाज, जीवनशैली, प्रेमप्यार के किस्से, झगडे, अपराध की कहानियां, स्त्री जीवन आदि सबकुछ हैं | कबूतरा जनजाति को केंद्र में रखकर लिखे इस उपन्यास का प्रत्येक कबूतरा पात्र अपनी जातिगत विशेषताओं से परिपूर्ण है | ये पात्र धैर्य, वीरता, जुझारूपन, जिद, आक्रमकता आदि गुणों के बल पर जीवनराह पर अग्रेसर हैं | हर प्रतिकूलता, अवरोध को किनारे करने की जिद उनमें भरी हुई है | यह उपन्यास तीन पीढ़ी की संघर्षगाथा है, जहाँ पर लेखिका ने भूरीबाई, कदमबाई, अल्मा इन तीन प्रमुख स्त्री पात्रों के जरिए सदियों से रोती, झींकती, अपमानित, प्रताड़ित स्त्री प्रतिमा को त्यागने की सलाह दी है | ये स्त्री पात्र निर्णयक्षम एवं स्वाभिमानी हैं, वे किसी भी परंपरागत अपराधबोध की कल्पना से ग्रस्त नहीं हैं | साम, दाम, दंड नीति को अपनाकर अपनी राह खुली कर लेने के लिए ये पात्र तत्पर रूप में चित्रित हैं | वहीँ दूसरी ओर लेखिका ने इस वास्तव को भी उजागर किया है कि उपन्यास के स्त्री पात्र अपनी नैतिक मान्यताओं के साथ भले ही अग्रेसर बने हुए हो पर पुरुष प्रधान व्यवस्था के दुष्परिणाम से स्त्री वर्ग मुक्त नहीं हुआ है | इन घुमंतू वर्ग की महिलाओं की ओर देखने का नजरिया आज भी स्वच्छ नहीं हैं | प्रस्तुत उपन्यास द्वारा लेखिका ने परिवार एवं समाज में स्त्री जीवन की सार्थकता पर सवाल उठाया है | अत: समाज की मुख्यधारा से किनारे रख दिए गए इन लोगों की जीवन लड़ाई आज भी जारी है | लेखिका का उद्देश्य घुमंतू जनजातियों या इन महिलाओं के दु:खों का दुखड़ा रोना नहीं हैं बल्कि वे इन्हें मानवीय पहचान देकर उनका सकारात्मक रूप समाज के सामने लाने के लिए प्रयत्नशील है |

बीज शब्द – घुमंतू, अपराधी, जनजाति, डेरा

प्रस्तावना :

घुमंतू जनजातियां सदियों से भारतीय समाज में जीती आई है | समाज की मुख्यधारा से किनारे फ़ेंक दिए गए ये लोग अपनी जीवनशैली, अपनी परंपराए आदि के साथ जीते आए हैं |

अंग्रेजों के गजटों-गजेटीयरों में इन्हें अपराधी कबीले या सरकश जनजातियां संबोधित किया है | 'आज, भारत की ३१३ घुमंतू जनजातियां और १९८ विमुक्त जनजातियां हैं... उनमें से कई को अभी भी विमुक्त जाती या पूर्व अपराधिक जनजाति के रूप में वर्णित किया गया है |' (अपराधिक जनजाति अधिनियम – विकिपीडिया) सालों से देश के गली, मोहल्लों, शहरों के किनारों पर अल्प कालिक बस्तियां बनाकर रहनेवाले, एक जगह से दूसरी जगह अपने काबिले को साथ लिए घूमते रहनेवाले ये लोग घुमंतू कहलाए जाते हैं | अपनी रोजी रोटी का कोई ठोस साधन नहीं, शिक्षा की कोई खासी व्यवस्था नहीं, जिससे व्यवसाय नौकरी के रास्ते इनके लिए ठप्प से हैं | ऐसे में अनेकों बार अपराध, चोरी, डकैती का रास्ते बड़ी आसानी से इनके सामने आ जाते हैं | जिससे अखबारों, समाचारों में अपराध सुर्ख़ियों में दिखाई देनेवाले मदारी, सपेरे, बनजारे, पारदी, कंजर, नट, सांसी, बावरियां, कबुतरें, ऐसी अनेक सी जनजातियां हैं जो हमारे देश में सभ्य समाज के हथिये पर बैठे सदियां गुजार देती हैं |

मैत्रेयी पुष्पा लिखित, 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास घुमंतू जनजाति 'कबूतरा' को केंद्र में रखकर लिखा गया है | बुंदेलखंड में लगभग विलुप्त होती जा रही इस कबूतरा जनजाति का पूरा ताना-बाना लोखिका ने यहां बुना है | जहाँ पर कबूतरा जनजाति की व्यवस्था, उनकी अपनी संस्कृति, रितरिवाज, जीवनशैली, प्रेम प्यार के किस्से, झगड़े, अपराध की कहानियां, वीरता, कबूतरा महिलाओं की नैतिकता के नए मानदंड सब कुछ मौजूद है | जो घुमंतू जनजाति का पूरा पूरा चित्र पाठकों के सामने उपस्थित कर देता हैं |

जिंदा रहने की जिद –

घुमंतू जनजातियों के पास पैसे कमाने के ठोस साधन न होने से अक्सर ये लोग चोरी डकैती जैसे कुमार्गो का अवलंब करते नजर आते हैं | जिससे सभ्य समाज की नजरों में ये अक्सर तिरस्कृत रहते हैं | पर इस बात की कोई चिंता इन्हें नहीं होती | इनके सामने एक ही उद्देश्य होता है जिंदा रहना | इनका जीवन संघर्ष जिंदा रहने के लिए होता है |

प्रस्तुत उपन्यास की कबूतरा स्त्री कदमबाई का पति जंगलिया बड़ा वीर, धैर्यवान है | गांव के कुलीन कृषक मंसाराम ने उसके हुनर को पहचान लिया है, जिससे वह जंगलियों को साथ लेकर गांव में आड़े तिरछे काम करता है | अपने विरोधकों से लड़ने के लिए वह जंगलिया को लेकर नई नई योजनाएं बनाता है | उसकी नजर गांव के प्रधान लल्लू राजा की पुरानी अटारी पर है जहां सोने की हनुमान की मूर्ति स्थापित है | मंसाराम के आदेश पर जंगलिया उसे चुरा लाता है | मंसाराम उस मूर्ति को जंगलिया की हिफाजत में रखना चाहता है | इस पर इन्कार दर्शाते हुए जंगलिया कहता है, 'इस कदम' (जंगलिया की पत्नी) ने अभी तक सोना देखा नहीं| हम सोना चुरातें हैं, पर बैयरों को नहीं दिखाते | सजने संवरने का मोह पाल बैठी तो ? हमें तो रोटी चाहिए मालिक | (पृ.१८, अल्मा कबूतरी) उस क्षण मंसाराम को लगता है जैसे कबूतरा को सोना, चांदी, रुपया, धन नहीं चाहिए | बस जिंदगी बनी रहे, जैसे तैसे जिंदा रहे यही इन घुमंतू जनजातियों का जीवनलक्ष्य होता है | वे न तो सभ्य समाज की तरह साधन संपत्ति का सपना देखते है न अमीर बनने का | जैसे ये सारी बाते उनके लिए कभी बनी ही नहीं है | बड़े बड़े सपने देखने से वे कतराते हैं | केवल जिंदा रहने की जिद लेकर ये जनजातियां सभ्य समाज के हाशिये पर अपनी जिंदगी गुजर देती हैं |

अपनी जनजाति के प्रति अभिमान की भावना –

स्वतंत्र भारत में समाज की मुख्य धारा से किनारे फ़ेंक दिये लोग भले ही अपराधी कबीले के रूप में समाज में तिरस्कार के पात्र हो परंतु ये राणी पदमिनी, राणा प्रताप, झलकारी बाई से अपना संबंध जोडते हैं | वे मानते हैं की वीरता उनकी रगों में है | इसीकारण हर प्रतिकूलता का सामना वे बडी वीरता के साथ कर सकते हैं | वीरता, शूरता, जुझारूपन के संस्कार इन्हें अपने ही परिवार में संस्कार रूप में प्राप्त होते हैं |

कदमबाई अपने पति के पीछे अपने बेटे को कबूतरा संस्कारों से संस्कारित करना चाहती है | वह चाहती है कि पति जंगलिया का हुनर, वीरता अपने बेटे राणा में वैसे के वैसे आ जाए | राणा अपने पिता जंगलिया का नाम रोशन करें | जब उसे राणा में कबूतरा संस्कारों की कमी महसूस होने लगती है तब निराश बनी कदम बेटे का हौसला बढ़ाते हुए पति, जंगलिया के शब्दों को उसके सामने रखती है, 'जंगलिया कहता था – ये रोज रोज के जौहर है, नए नए पैंतरे निकलते आते हैं | बेटा आलस हमारा दुश्मन है | शिकार करेगा नहीं तो शिकार हो जाएगा |' (पृ.३९, अल्मा कबूतरी) बहुत समझाने के बावजूद राणा जब कबूतरों के पैंतरे सीखने में असफल दिखाई देने लगता है तब बड़ी वेदना के साथ वह बेटे को समझाती है, 'पगले गाय भैंस बसावटों की निशानी होती है और हमारी जिंदगी खरपतवार, कज्जा लोग उखाड़ने पर आमादा रहते हैं | देखता नहीं, पुलिस पीटने आ जाती है | ठेकेवाले बेबात ही हमें खदेड़ते हैं | पर बेटा हम भी कम नहीं भूखे प्यासे भी तो पखाने लूटने से बाज नहीं आते |' (पृ.३८, अल्मा कबूतरी)

इस प्रकार कबूतरा जाति की बहादुरी भरी बाते सुनाकर वह राणा का हौसला जगाए रखना चाहती है | उसमें कबूतरा जनजाति की वीरता, धैर्य, हिम्मत जगाना चाहती है | कदमबाई की तरह हर कबूतरा अपनी जाति के प्रति समर्पित है | कहीं न कहीं

उनमें इस बात का भय है कि यदि हम लड़ेंगे नहीं तो मिटा दिए जाएंगे | अपना अस्तित्व बनाए रखने की जिद उन्हें अधिकाधिक जुझारू एवं सजग बनाती है |

जुझारूपन –

जुझारूपन कबूतरा जनजाति की स्वतंत्र पहचान है | जिंदा रहने की जिद इन्हें अधिकाधिक जुझारू बना देती है | कदमबाई का पति जंगलिया अपनी उम्र के १२ वे साल से अपना पराक्रम दिखाने लगा था | केवल ९ वर्ष की आयु में उसने एक साइकलसवार की साइकल के पहिए में डंडा डालकर उसकी सोने की अंगूठी चूरा ली थी और रिवाज के अनुसार उसे कबीले के प्रमुख को देने से इन्कार किया था | अपनी शादी में उसके ससूर के पैसों को लौटाने का उसका इरादा बड़ा नेक था और उसे पूरा करने के लिए दस मन गेहू चुराने की हिम्मत दिखाई थी | बाद में मंसाराम के लिए उसने खूब सारे ऐसे काम किए जिसमें नैतिकता भले ही दिखाई न दे परंतु जिंदा रहने के लिए उसकी लड़ाई उसका जुझारूपन दिखाती है |

कबूतरा स्त्री भी बड़ी जुझारू होती है | समाज द्वारा प्राप्त उपेक्षा, उनके पुरुषों की चोरी डकैती, अन्य गुनाहों के कारण उनके पुरुषों का जेल में बंद रहना, स्त्रियों का यौनशोषण इन सबके बावजूद इनका जुझारूपन इन्हें विशेष बनाता है |

प्रस्तुत उपन्यास की भूरीबाई अपने पति के देहांत के बाद बिल्कुल अकेली हो जाती है | पुरुषों द्वारा शोषित होती है फिर भी अपने बेटे रामसिंग को पढ़ाने का लक्ष्य रखती है | इसके लिए उसे बार-बार बलात्कारित होना पड़ता है फिर भी वह अपने लक्ष्य पर अटल रहती है |

दूसरी पीढ़ी की कदमबाई पति जंगलिया के देहांत बाद अपना सौंदर्य, शराब बनाने का हुनर और कबूतरा संस्कारों के दम पर बेटे राणा का लालनपालन बड़ी हिम्मत के साथ कर लेती है | उसे राणा को कबूतरा जनजाति का पक्का प्रतिनिधी बनाना है | इसके लिए वह स्वयं उसे शराब पिलाती है | उसके हाथों में शस्त्र देकर उसे चोरी करने के लिए प्रवृत्त करती है | पर जब वह देखती है कि राणा में कबूतरा जनजाति के लक्षण नहीं है तब वह दु:खी तो खूब बनती है परंतु बिना हिम्मत हारे जीवनराह पर बनी रहती है | इन दोनों महिलाओं की तरह अल्मा कबूतरी राणा से विवाह का सपना देखती है, पर उसका सपना पूरा नहीं हो पाता | उसे अनेकों बार पुरुषों से शोषित होना पड़ता है | बाद में सत्ताधारी राजनेता के संपर्क में आने पर वह राजनीति का मूल्य जन जाति है | जिससे वह राजनीति का दामन थामकर अपनी जैसी निचली जातियों के लिए कुछ ठोंस कार्य करने का लक्ष्य बनाती है | अत: हर प्रतिकूलता को सीढ़ी बनाकर आगे बढ़ने, हर अवरोध को पार करनेवाली यह कबूतरा महिलाएं अपनी जाति का जुझारूपन प्रस्तुत करती हैं |

कबीले की महिलाओं का यौन शोषण –

स्त्री के प्रति अनादर की भावना स्त्री शोषण का मूल कारण है | स्त्री चाहे किसी भी वर्ग की क्यों न हो पर उसके प्रति पुरुषों की अनादर की भावना ही उसे शोषित बनाती है | इसे पुरुष वर्ग की मानसिक बीमारी कहना अधिक योग्य है | प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित कबूतरा जनजाति की लगभग हर महिला यौन शोषण की शिकार है | सदियों से इस जनजाति के स्त्री पुरुषों का नसीब जैसे लगभग तय हो चुका है | लेखिका ने लिखा है, 'कबूतरा पुरुष या तो जंगल में रहता है या जेल में ..... स्त्रियां शराब की भट्टियों पर या हमारे बिस्तरों पर |' (मलपृष्ठ, अल्मा कबूतरी) अर्थात उच्चवर्णीयों या सभ्य समाज के पुरुषों की दृष्टि में इन स्त्रियों का स्थान लगभग तय हो चुका है | सभ्य समाज की मुख्यधारा से बाहर फेंके गए इस समाज ने अपनी इस वास्तविकता को मूक बनकर स्वीकार किया है |

प्रस्तुत उपन्यास तीन पीढ़ियों की कथा प्रस्तुत करता है | यहां पर तीनों पीढ़ियों की महिलाओं के साथ कबीले की लगभग हर स्त्री यौन शोषण की शिकार बनी है | अधिकांशत: आर्थिक प्रतिकूलता से उभरने के प्रयास में थे महिलाएं यौन शोषण का शिकार बनी हुई है | सदियों से शोषण की इस परंपरा को उन्होंने जैसे स्वीकार लिया है | तीसरी पीढ़ी की अल्मा में इस बात को लेकर अस्वस्थता जरुर है | अपनी व्यथा को उसने खोला है | वह कहती है, 'अपनी देह को देखती हूं तो घिना जाति हूं |' अपने से ही घूरती नजरें.. टपकाती लारें.. फूहड़ सीत्कारे.. फाहशा गालियां.. सस्ती हरकतें छूने को ललचाती हथेलियां.. अगर इन सबको

लगातार गिरनेवाले कूड़े में तब्दील कर दूं तो अल्मा.. औरत रहूं ही नहीं | मैं बन जाउंगी कूड़े का विशाल ढेर ..पाताल से आकाश तक फैला | ज़माने भर की विकृतियों को ढोती गंदगी का पहाड़ | (पृ.२८७, अल्मा कबूतरी) कबूतरा जनजाति की लगभग हर स्त्री की मनोवस्था यही है | यहां पर लेखिका का कबूतरा स्त्री की मनोवस्था में झांकने का प्रयत्न लीक से हटकर है | उन्होंने इन स्त्रियों को प्राप्त पीड़ा, अन्याय, शोषण को इन महिलाओं की जीवनविसंगति के रूप में रेखांकित नहीं किया है | इन स्त्रियों ने प्राप्त प्रतिकूलता से जीवन से लड़ने की हिम्मत अपने आप में निर्माण की है | इन्होंने जीवन और वेदना के रहस्य को समझा है | वेदना से उभरकर आगे बढ़ने, अपने जीवन के लक्ष्य को साध्य करने का हुनर इन्होंने प्राप्त कर लिया है | दुःख पहचानने और दुःख बांटने का आत्मविश्वास इन महिलाओं ने प्राप्त कर लिया है | यह लेखकीय कौशल है कि उन्होंने कबूतरा स्त्री की व्यथा को उसकी तीव्र जीवन आस्था के रूप में रेखांकित किया है |

नैतिकता के मानदंडों में परिवर्तन –

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने परंपरावादी विचारों को बिल्कुल किनारे कर दिया है | पुराने नैतिक बोध का खुलकर विरोध करते हुए इन्होंने नैतिकता के नए मानदंड प्रस्तुत किए हैं |

उपन्यास के पात्र जंगलिया, भूरीबाई, कदमबाई, अल्मा अपने तरीके से जीवनराह पर चलते दिखाई देते हैं |

तीन पीढ़ी की इस संघर्ष गाथा में पहली पीढ़ी की भूरीबाई पति देहांत के बाद बेटे रामसिंग को पढ़ाने का लक्ष्य लेकर जीवनराह पर अग्रेसर होती है, जिस दरम्यान उसे बार बार शोषित होना पड़ता है | यही स्थिति कदमबाई की है वह भी जंगलिया के देहांत बाद अपना अस्तित्व बचाने के लिए मजबूर अवस्था में चित्रित है | जहाँ पर उसे कुलीन मंसाराम के प्रति आकर्षण भी है और घृणा भी | पर वह मजबूर अवस्था में जीवन संघर्ष करती चित्रित है | तीसरी पीढ़ी की आल्मा राणा से विवाह का सपना टूटने की स्थिति में सत्ताधारी राजनेताओं के संपर्क में आने पर राजनीति के बलबूतें निम्न जातियों के विकास के लिए काम करने की ठान लेती है |

भले ही ये महिलाएं अपने जीवन संघर्ष में अनेकों बार नैतिकता को त्याग चुकी महिलाएं प्रतीत होती हो | परंतु लेखिका ने उन्हें नैतिकता के नए मानदंडो के साथ रेखांकित किया हैं | जहाँ पर यह दिखाई देता है कि ये महिलाएं परंपरागत नैतिक नियमों को साथ लेकर नहीं चल रही है | उनके पास निरंतर लड़ते रहने की उर्जा है | जीवनलक्ष्य हैं | सपने हैं | नैतिकता के नए मानदंडो के साथ वे अपना लक्ष्य साध्य कर रहीं हैं | यह घुमंतू जनजाति की महिलाओं की खासी उपलब्धि है |

निष्कर्षत: स्वतंत्र भारत में समाज की मुख्यधारा से किनारे फ़ेंक दिए कबूतरा समाज के संपूर्ण ताने-बाने को लेखिका ने पूरी सक्षमता से रेखांकित किया है | साथ ही प्रस्तुत उपन्यास के स्त्री पात्रों के भावविश्व को लेखिका ने अत्यत सूक्ष्मत: से खोला है, यह इस उपन्यास की महत्वपूर्ण उपलब्धि है | स्त्री को स्त्री के नजरिए से देखने का यह पर्यास अत्यंत सफल एवं संवेदनशील है |

संदर्भ ग्रंथ :

१) अल्मा कबूतरी – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
२) स्त्री चिंतन की चुनौतियां – रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
३) नए दौर की नारी – डॉ. शंभुनाथ द्विवेदी, दिया डिस्ट्रीब्यूटर कानपूर |